Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.

Constituents of Inference. (Lecture-1)

अनुमान के घटक (व्याख्यान-1)

चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दार्शनिक अनुमान को वैध ज्ञान का स्वतंत्र साधन मानते हैं। इन सभी में अनुमान से ज्ञान प्राप्त करने की विधि में थोड़ा बहुत अंतर है लेकिन सभी ने अनुमान को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में स्थापित किया है। भारतीय दार्शनिकों में अनुमान को लेकर निम्न बिन्दुओं पर मत-ऐक्य दृष्टिगत है। ये अनुमान के सामान्य लक्षण कहलाते हैं। ये सामान्य लक्षण निम्न हैं।

(i) अनुमान परोक्ष ज्ञान है
(ii) अनुमान व्याप्ति पर आधारित होता है।
(iii) अनुमान में लिंग (हेतु) की महत्वपूर्ण भूमिका है।
(iv) अनुमान प्रत्यक्ष के बाद होने वाला परवर्ती ज्ञान है।

अनुमान के मुख्यतः तीन घटक हैं। जो निम्न हैं—

(1) पक्ष
(2) साध्य
(3) हेतु

(1) पक्ष - "पक्ष्यते इति पक्षः"। व्युत्पत्ति की दृष्टि से पक्ष वह है जिसमें साधन और साध्य दोनों को समाविष्ट करने की क्षमता होती है। अर्थात पक्ष साधन और साध्य दोनों का अधिष्ठान या आश्रय है। जैसे—

Scanned with CamScanner

जैसे - जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है, जैसे चूल्हा में
पर्वत पर धुआँ है।
∴ पर्वत पर आग है।

उपरोक्त अनुमान में 'पर्वत' पक्ष है क्योंकि पर्वत ही साधन और साध्य (धुआँ और अग्नि) दोनों का आश्रय स्थल है। अधिकरण होने मात्र से कोई वस्तु पक्ष नहीं हो सकता है। जैसे रसोईघर भी अग्नि और धुआँ का अधिष्ठान है किन्तु वह उपरोक्त अनुमान का पक्ष नहीं है। पक्ष वह अधिकरण है जिसमें साध्य (अग्नि) की अनिश्चित उपस्थिति संदिग्ध रहती है। अनुमान में हेतु (धुआँ) ज्ञात रहता है तथा साध्य (अग्नि) अज्ञात रहता है। पक्ष साधन और साध्य का आश्रय स्थल है। पक्ष में साधन निश्चित रूप से तथा साध्य अनिश्चित रूप से उपस्थित रहता है।

भारतीय न्यायशास्त्र में पक्ष के समानान्तर दो पद पाये जाते हैं- (i) सपक्ष (ii) विपक्ष या असपक्ष

सपक्ष :- जिस स्थान में साध्य की सत्ता पहले से निश्चित हो उसे सपक्ष कहते हैं। पक्ष और सपक्ष दोनों साध्ययुक्त होते हैं, किन्तु पक्ष में साध्य की उपस्थिति अनिश्चित होती है, वहीं साधन की उपस्थिति निश्चित होती है। वहीं सपक्ष में साधन और साध्य दोनों की उपस्थिति निश्चित होती है। जैसे उपरोक्त न्याय में चूल्हा सपक्ष है क्योंकि इसमें साधन और साध्य दोनों का प्रत्यक्ष होता है। अतः चूल्हा सपक्ष है यह पक्ष नहीं है क्योंकि चूल्हा में साध्य की उपस्थिति निश्चित है, जबकि पक्ष में साध्य की उपस्थिति अनिश्चित होती है।

Scanned with CamScanner